

## Twitter Thread by Anshul Pandey



**Anshul Pandey**

@Anshulspiritual



**TODAY I WILL REMOVE ALL MISUNDERSTANDING & WRONG INFO ABOUT KRISHNA CHIRHARAN GOPI LEELA.**

**PLEASE BOOKMARK THIS THREAD AND REFUTE THOSE WHO ARE DOING PROPAGANDA.**

**I often see such kind of images floating around & with wrong info about Bhagwan Krishna.**

**So lets start with Gokul..**



Some people are of the view that 'gopi chirharan leela' was vulgar and obscene. People forget that Krishna stayed at Gokul for merely eleven years. This leela possibly must have been done when he must be eight or nine. How could gestures of a child can be obscene.

Rishi's and saints have used such words in their scriptures for centuries but we in this modern world are taking their present day meaning without considering the inner nuances of those words.

Such words were used to make us aware about the pure bhakti which according to them was that there should be no barrier between Parmatma and devotee. Spiritualists believe that Krishna is ATMA and gopis are VRITI(■■■■■■■).

Once the cover of VRITI or attitude is destroyed that is Chirharan and finally when they surrender themselves to the Atma(Krishna) that is 'Raas'.

■ Credit - Krishna\_subconscious & Yogfoundation

I have posted in Social media platforms too, Do follow me there too■

Instagram link■

<https://t.co/XrhIzQUFAD>

Facebook page link ■

<https://t.co/4SDEfhVQNs>

Just in case if you have not subscribed to my youtube channel, please do subscribe, I have already posted 4 Videos till now on different subjects. Do watch them and give your feedback in comments section.

<https://t.co/W2jnWlziJC>

SS from Bhagwat puran■





निर्धारित कर दी। इससे भी स्पष्ट है कि भगवान् श्रीकृष्णमें किसी भी कामचिन्ताकी कल्पना नहीं थी। कोनो पुरुषका चित्त वस्तुहीन स्थितियोंको देखकर एक क्षणके लिये भी कबल वशमें रह सकता है।

एक बात बड़ी—विलक्षण है। भगवान्‌के समुत्पन्न जानेके पहले जो वस्त्र सम्पूर्णकी पूर्णतामें बाधक हो रहे थे विशेषरूपका काम कर रहे थे—वही भगवान्‌की कृपा, प्रेम, सान्निध्य और वरदान प्राप्त होनेके पश्चात् 'प्रेमादे' स्वरूप हो गये। इसका कारण क्या है? इसका कारण है भगवान्‌का सम्बन्ध। भगवान्‌ने अपने हाथसे उन वस्त्रोंको उठाया था और फिर उन्हें अपने उत्तम अंग कंधेपर रख लिया था। नीचेके शरीरमें पहनेकी साड़ियाँ भगवान्‌के कंधेपर चढ़कर—उनका संस्पर्श पाकर कितनी अप्रकृत रसात्मक हो गयीं, कितनी पवित्र—कृष्णमय हो गयीं, इसका अनुमान कौन लगा सकता है। असलमें यह संसार तभीतक बाधक और विक्षेपजनक है, जबतक कि भगवान्‌से सम्बन्ध और भगवान्‌का प्रसाद नहीं हो जाता। उनके द्वारा प्राप्त होनेपर तो यह वस्त्र ही मुक्तिस्वरूप हो जाता है। उनके सम्पर्कमें जाकर माया शुद्ध विद्या बन जाती है। संसार और उसके समस्त कर्म अनुपम नहीं रख सकता। नरक नहीं रहता, भगवान्‌का दर्शन होते रहनेके कारण वह वैकुण्ठ बन जाता है। इस स्थितिमें पहुँचकर बड़े-बड़े साधक प्राकृत पुरुषके समान आचरण करते हुए—से दीखते हैं। भगवान् श्रीकृष्णकी अपनी होकर गोपियों पुनः वे ही वस्त्र धारण करती हैं अथवा श्रीकृष्ण वे ही वस्त्र धारण करते हैं; परन्तु गोपियोंकी दृष्टिमें अब ये वस्त्र वे वस्त्र नहीं हैं; वस्तुतः वे हैं भी नहीं—अब तो ये दूसरी वस्तु हो गये हैं। अब तो वे भगवान्‌के पावन प्रसाद हैं, पल-पलपर भगवान्‌का स्मरण करानेवाले भगवान्‌के परम सुन्दर प्रतीक हैं। इसी उद्देशे स्वीकार भी किया। उनकी प्रेममयी स्थिति मर्यादाके ऊपर थी, फिर भी उन्होंने भगवान्‌की इच्छासे मर्यादा स्वीकार की। इस दृष्टिसे विचार करनेपर ऐसा जान पड़ता है कि भगवान्‌की यह चौरहरण-लीला भी अन्त लीलाओंकी भाँति उच्चतम मर्यादासे परिपूर्ण है।

भगवान् श्रीकृष्णकी लीलाओंके सम्बन्धमें केवल वे ही प्राचीन आर्षग्रन्थ प्रमाण हैं जिनमें उनकी लीलाका वर्णन हुआ है। उनमेंसे एक भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसमें श्रीकृष्णकी भगवत्‌ताका वर्णन न हो। श्रीकृष्ण 'स्वयं भी नहीं मानते। और जो उन ग्रन्थोंको ही प्रमाण नहीं मानते, वे उनमें वर्णित लीलाओंके आधारपर श्रीकृष्ण-चरित्रकी समीक्षा करनेका अधिकार भी नहीं रखते। भगवान्‌की लीलाओंको मानवीय चरित्रके समकक्ष रखना शास्त्र-दृष्टिसे एक महान् अपराध है और उसके अनुकरणका तो सर्वथा ही निषेध है। मानवबुद्धि—जो स्थूलाआर्शसे ही परिवेष्टित है—केवल जड़के सम्बन्धमें ही सोच सकती है, भगवान्‌की दिव्य चिन्मयी लीलाके सम्बन्धमें कोई कल्पना ही नहीं कर सकती। वह बुद्धि स्वयं ही अपना उपहास करती है, जो समस्त बुद्धियोंके प्रेरक और बुद्धियोंसे अत्यन्त परे रहनेवाले परमात्माकी दिव्य लीलाको अपनी कसौटीपर कसती है।

हृदय और बुद्धिके सबथा विपरीत होनेपर भी यदि थोड़ी देरके लिये मान लें कि श्रीकृष्ण भगवान् नहीं थे या उनकी यह लीला मानवी थी तो भी तर्क और युक्तिके सामने ऐसी कोई बात नहीं टिक पाती जो श्रीकृष्णके चरित्रमें लाञ्छन हो। श्रीमद्भागवतका पारायण करनेवाले जानते हैं कि ब्रजमें श्रीकृष्णने केवल ग्यारह वर्षकी अवस्थातक ही निवास किया था। यदि रासलीलाका समय दसवाँ वर्ष मानें तो नवें वर्षमें ही चौरहरण लीला हुई थी। इस बातकी कल्पना भी नहीं हो सकती कि आठ-नौ वर्षके बालकमें कामोत्तेजना हो सकती है। गाँवकी गँवारिन ग्वालिन, जहाँ वर्तमानकालकी नागरिक मनोवृत्ति नहीं पहुँच पायी है, एक आठ-नौ वर्षके बालकसे अर्ध-सम्बन्ध करना चाहें और उसके लिये साधना करें—यह कदापि सम्भव नहीं दीखता। उन कुमारी गोपियोंके मनमें कलुषित वृत्ति थी, यह वर्तमान कलुषित मनोवृत्तिकी उद्‌घटना है। आनन्द-होरी